बौद्ध दर्शन

Question Booklet No. 00008

11P/276/1

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No. | | | | | | | | |

Roll No. (Write the digits in words) .....

Serial No. of Answer Sheet .....

.....

Day and Date ..... **(Signature of Invigilator)**

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only ***blue/black ball-point pen*** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall ***except the Admit Card without its envelope***.
3. ***A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.***
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space prvided above.
5. ***On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.***
6. ***No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Queston Booklet.***
7. ***Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.***
8. ***Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.***
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR *Answer Sheet*** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages :24 *[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]*

11P/276/1

No. of Questions : 150

प्रश्नों की संख्या : 150

Time : 2 Hours ***Full Marks : 450***

समय : 2 घण्टे ***पूर्णाङ्क : 450***

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. ***One mark will be deducted for each incorrect answer***. Zero mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3 (तीन)** अंक का है। ***प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।*** प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक ***शून्य*** होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. बुद्ध के पिता का नाम है :

(1) कपिल (2) मोग्गलान

(3) शुद्धोधन (4) अजित केशकम्बली

02. भगवान् बुद्ध का जन्म स्थान है :

(1) देवदह (2) राजधानी (3) कपिलवस्तु (4) लुम्बिनी

03. लुम्बिनी में इस राजा का स्तम्भलेख प्राप्त हुआ है :

(1) बिन्दुसार (2) चन्द्रगुप्त मौर्य (3) अशोक (4) अजातशत्रु

04. 'सब्बेधम्मा अनिच्चा' ति यदा पञ्ञाय पस्सति। अथ निब्बिन्दती दुक्खे एस मग्गोविसुद्धिया। यह गाथा इस ग्रन्थ में मिलती है :

(1) धम्मसंगणि (2) थेरगाथा

(3) अभिधम्मावतारो (4) धम्मपद

05. धम्मपदट्ठकथा के लेखक हैं :

(1) बुद्ध घोष (2) धर्मत्रात (3) अश्वघोष (4) बोधिरूचि

06. धम्मपद है :

(1) बुद्ध की उक्तियों का संग्रह (2) महावीर के उपदेशों का संकलन

(3) धम्मसंगणि का दूसरा नाम (4) विनयपिटक का एक अंश

07. बुद्धोपदिष्ट कारणता का सिद्धान्त है :

(1) प्रतीत्यसमुत्पाद (2) आरम्भवाद

(3) क्षणभङ्गवाद (4) अनेकान्तवाद

08. बुद्ध का बचपन का नाम था :

(1) देवदत्त (2) सिद्धार्थ (3) वर्धमान (4) आर्यशूर

09. धम्मपद में मुख्यत: प्रतिपादित है :

(1) बौद्ध आचार शास्त्र और निर्वाण प्राप्ति का मार्ग

(2) बौद्ध तन्त्र सिद्धान्त

(3) हेतुवाद

(4) अधीत्यसमुत्पाद

10. बुद्ध के उपदेशों की भाषा थी :

(1) मागधी या पालि (2) अर्धमागधी प्राकृत

(3) बौद्ध संस्कृत (4) संस्कृत

11. सुत्तपिटक में निकायों की संख्या है :

(1) छः (2) चौदह (3) पाँच (4) दस

12. बुद्ध के प्रधान शिष्य थे :

(1) मोगल्लान (2) आरूणि (3) देवदत्त (4) आनन्द

13. बुद्ध का बोधि स्थल है :

(1) बोधगया (2) नालन्दा (3) लुम्बिनीवन (4) श्रावस्ती

14. बुद्ध की निर्वाण-स्थली है :

(1) कुसीनारा (2) जेतवन (3) सावत्थी (4) सुंसुमारगिरि

15. विनयपिटक में संकलित हैं :

(1) बौद्ध भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के आचार के नियम
(2) बौद्ध तर्कशास्त्र के सिद्धान्त
(3) बौद्ध अभिधर्म
(4) हीनयान के सिद्धान्त

16. बुद्ध की माता का नाम है :

(1) गौतमी (2) महामाया देवी
(3) आर्यिका (4) यशोधरा

17. बुद्धचरित इनकी रचना है :

(1) अश्वघोष (2) कालिदास (3) आर्यशूर (4) कुमारलात

18. बुद्धचरित का वर्ण्यविषय है :

(1) बुद्ध का जीवनचरित (2) बुद्ध का निर्वाण
(3) बुद्ध का दर्शन (4) बौद्ध निकायों का सैद्धान्तिक विभेद

19. जातकमाला इनकी रचना है :

(1) अश्वघोष (2) कुमारलात (3) आर्यशूर (4) जिनभद्र

20. वज्रसूची के रचयिता हैं :

(1) आर्यदेव (2) अश्वघोष (3) कुमारलात (4) नागसेन

21. वर्ण-व्यवस्था का खण्डन इन कृति का विषय है :

(1) वज्रसूची (2) ज्ञानप्रस्थानशास्त्र
(3) अभिधर्मामृत (4) सुहृल्लेख

22. त्रिस्वभावनिर्देश के रचयिता हैं :

(1) वसुबन्धु (2) असङ्ग (3) स्थिरमति (4) नागार्जुन

23. बोधिचर्यावतार इनकी रचना है :

(1) शान्तिदेव (2) शान्तरक्षित (3) ज्ञानश्रीमित्र (4) वसुबन्धु

24. सुहृल्लेख के रचयिता हैं :

(1) असङ्ग (2) वसुबन्धु (3) आर्यदेव (4) नागार्जुन

25. पालिभाषा में प्रधानत: निबद्ध हैं :

(1) बुद्ध के उपदेश और उनकी अट्ठकथायें
(2) जातक कथायें
(3) जैन श्रावकाचार
(4) महावीर के उपदेश

26. बौद्धों के मुख्य दार्शनिक प्रस्थानों की संख्या है :

(1) चार (2) पाँच (3) तीन (4) दो

27. वैभाषिक निर्वाण को मानते हैं :

(1) सुखस्वरूप एवं भावरूप (2) अभावरूप

(3) भावाभावरूप (4) शून्य

28. वैभाषिक मत में धर्मों की संख्या है :

(1) चवालीस (44) (2) बहत्तर (72) (3) पचहत्तर (75) (4) सौ (100)

29. सौत्रान्तिक मत मुख्यत: है :

(1) बाह्यार्थ प्रत्यक्षतावादी (2) बाह्यार्थनि:स्वभावतावादी

(3) बाह्यार्थनिषेधवादी (4) बाह्यार्थानुमेयवादी

30. शून्यता सिद्धान्त के मुख्य प्रतिष्ठापक आचार्य हैं :

(1) नागार्जुन (2) वसुबन्धु (3) असङ्ग (4) नागसेन

31. अनिरोधमनुत्पादमनुच्छेदमशाश्वतम् अनेकार्थमनानार्थमनागममनिर्गमम्।। य: प्रतीत्यसपुत्पादं प्रपञ्चोपशमं शिवम् । देशयामास सम्बुद्धस्तं वन्दे वदतां वरम् ।। ये कारिकायें इस ग्रन्थ से उद्धृत हैं :

(1) माध्यमिककारिका (2) तत्त्वसङ्ग्रह

(3) अभिधर्मकोष (4) तत्त्वरत्नावली

32. तत्त्वसङ्ग्रह के रचयिता हैं :

(1) शान्तिदेव (2) आर्यदेव (3) शान्तरक्षित (4) कमलशील

33. वसुबन्धु की कृति है :

(1) अभिधर्मदीप (2) अभिधर्मामृत

(3) अभिधर्ममहाविभाषाशास्त्र (4) अभिधर्मकोष

34. योगाचार मत में बाह्यार्थ हैं :

(1) असत् और अभावरूप (2) शून्य और नि:स्वभाव

(3) प्रत्यक्ष और क्षणिक (4) अनुमेय और नित्य

35. योगाचारभूमि के रचयिता हैं :

(1) आचार्य वसुबन्धु (2) आचार्य मैत्रेयनाथपाद

(3) आचार्य स्थिरमति (4) आचार्य असङ्ग

36. महायानसूत्रालङ्कारकारिका के रचयिता हैं :

(1) आचार्य मैत्रेयनाथ (2) आचार्य वसुबन्धु

(3) आचार्य स्थिरमति (4) आचार्य हरिभद्र

37. तत्राकाशमनावृतिः यह कारिकांश इस ग्रन्थ से उद्धृत हैं :

(1) अभिधर्मदीप (2) अभिधर्मामृत

(3) अभिधर्ममहाविभाषाशास्त्र (4) अभिधर्मकोश

38. प्रतिसङ्ख्यानिरोध है एक :

(1) असंस्कृत धर्म (2) संस्कृत धर्म (3) विपाकधर्म (4) निरोधधर्म

39. दुःख जाति, जरा और अनित्यता इसके लक्षण हैं :

(1) असंसकृतधर्म (2) अव्याकृत धर्म (3) संस्कृत धर्म (4) चैत्तधर्म

40. नागार्जुन जगत् को मानते हैं :

(1) निःस्वभाव और शून्य (2) शाश्वत और सस्वभाव

(3) उच्छेद और असत्स्वभाव (4) नित्य और अनुत्पन्न

41. हरिवर्मा इस सम्प्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं :

(1) सत्यसिद्धि सम्प्रदाय (2) साम्मितीय सम्प्रदाय

(3) थेरवाद (4) महासाङ्घिक

42. सत्यसिद्धिशास्त्र के रचयिता हैं :

(1) हरिवर्मा (2) कात्यायनीपुत्र

(3) शारिपुत्र (4) आर्यदेव

43. सत्यसिद्धि शास्त्र के संस्कृत में पुनरुद्धारक हैं :

(1) आचार्य अय्यास्वामी शास्त्री (2) आचार्य पी.वी. बापट

(3) आचार्य प्रह्लाद प्रधान (4) आचार्य शान्ति भिक्षु शास्त्री

44. महायान का मुख्य पूर्ववर्ती सम्प्रदाय है :

(1) थेरवाद (2) महासाङ्घिक (3) साम्मितीय (4) अन्धक

45. अभिसमयालङ्कार कारिका के रचयिता हैं :

(1) मैत्रेयनाथ (2) असङ्ग (3) हरिभद्र (4) वसुबन्धु

46. कर्मक्लेशक्षयान्मोक्षः कर्मक्लेशा विकल्पतः। ते प्रपञ्चात् प्रपञ्चस्तु शून्यतायां निरुध्यते ॥ यह कारिका इस ग्रन्थ से उद्धृत है :

(1) शून्यतासप्तति कारिका (2) आर्यरत्नावली

(3) विग्रहव्यावर्त्तनी (4) माध्यमिक कारिका

47. 'साकारसिद्धि' का सिद्धान्त इन्हें इष्ट है :

(1) वैभाषिक (2) माध्यमिक

(3) सौत्रान्तिक (4) योगाचार विज्ञानवादी

48. माध्यमिक मत में तत्त्व है :

(1) मध्यम मार्ग (2) संवृतिसत्य द्वारा साक्षात्करणीय

(3) चतुष्कोटि विनिर्मुक्त (4) सत् और शाश्वत

49. अप्रतिसङ्ख्यानिरोध है :

(1) उत्पदात्यन्त विघ्नस्वरूप (2) प्रज्ञा द्वारा साक्षात्करणीय

(3) निर्वाण (4) आकाश से अभिन्न

50. अव्याकृत प्रश्नों की सङ्ख्या है :

(1) चौदह (14) (2) चार (4) (3) दस (10) (4) बारह (12)

51. विज्ञान (ज्ञप्ति) मात्रतासिद्धि के रचयिता हैं :

(1) आर्य असङ्ग (2) मैत्रेयनाथ (3) वसुबन्धु (4) स्थिरमति

52. अष्टसाहास्त्रिकाप्रज्ञापारमिता पर आधृत है :

(1) माध्यमिक मत (2) योगाचार मत (3) सौत्रान्तिकमत (4) तन्त्रवाद

53. विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि का प्रतिपाद्य विषय है :

(1) विज्ञानवाद सिद्धान्त (2) सौत्रान्तिक मत

(3) तन्त्रमत (4) शून्यता सिद्धान्त

54. हेतु बिन्दु के रचयिता हैं :

(1) दिङ्नाग (2) धर्मकीर्ति (3) प्रज्ञाकर (4) अर्चट

55. बौद्धमत में प्रमाण का मान्य लक्षण है :

(1) प्रमाकरणं प्रमाणम् (2) अविसंवादिज्ञानं प्रमाणम्

(3) अनुमितिकरणं प्रमाणम् (4) अज्ञातार्थज्ञापकं प्रमाणम्

56. बौद्ध आचार्य प्रमाणों की संख्या मानते हैं :

(1) छः (06) (2) पाँच (05) (3) चार (04) (4) दो (02)

57. निर्वाण है एक :

(1) असंस्कृत धर्म (2) अव्याकृत धर्म

(3) अकुशल धर्म (4) संस्कृत धर्म

58. प्रतीत्यसमुत्पाद के भवाङ्ग हैं :

(1) बारह (12) (2) दस (10) (3) नौ (09) (4) सात (07)

59. संसार और निर्वाण की एक कोटि मानते हैं :
(1) वसुबन्धु (2) मैत्रेयनाथ (3) आर्यदेव (4) नागार्जुन

60. बुद्ध के समय में पालि इस प्रदेश में बोली जाती थी :
(1) मध्यदेश और मगध (2) अपरान्त देश
(3) आन्ध्रदेश (4) काश्मीर और कर्णाटक

61. महायान सूत्रों की भाषा है :
(1) पालि (2) अर्धमागधी (3) अपभ्रंश (4) बौद्धसंस्कृत

62. धम्मपद इसका अंश है :
(1) खुद्दकपाठ (2) संयुत्तनिकाय (3) खुद्दकनिकाय (4) विनयपिटक

63. खुद्दकनिकाय का अंश है :
(1) संयुक्तागम (2) संयुत्तनिकाय (3) कथावत्थु (4) सुत्तनिपात

64. योगाचार दर्शन मानता है :
(1) जगत् का सत्स्वरूप (2) जगत् की नि:स्वभावता
(3) जगत् की क्षणभंगुरता एवं भावरूपता (4) जगत् की साकाररूपता

65. सहोपलम्भनियम को मानते हैं :
(1) योगाचार विज्ञानवादी (2) माध्यमिक
(3) सौत्रान्तिक (4) नैयायिक

66. कर्मसिद्धि प्रकरण इनकी रचना है :
(1) मैत्रेयनाथ (2) असंग (3) चन्द्रकीर्ति (4) वसुबन्धु

67. वसुबन्धु की कृति है :
(1) विंशिका (2) महायानसूत्रालङ्कार
(3) महायानोत्तरतन्त्रशास्त्र (4) अभिधर्मामृत

68. नागार्जुन की रचना है :

(1) मध्यमार्थसङ्ग्रह (2) मध्यमकावतार

(3) विग्रहव्यावर्त्तनी (4) इष्टोपदेश

69. चन्द्रकीर्ति की रचना है :

(1) चतु:शतक (2) चतु:शतकवृत्ति

(3) शून्यतासप्तति (4) अभिसमयालङ्कार

70. प्रसन्नपदा मध्यमकवृत्ति के रचयिता हैं :

(1) नागार्जुन (2) अभयकीर्ति (3) चन्द्रकीर्ति (4) असङ्ग

71. दशरथ जातक में इनकी कथा वर्णित है :

(1) दशरथ, राम (2) बुद्ध (3) कृष्ण (4) शुद्धोदन

72. शून्यतासप्तति कारिका के रचयिता हैं :

(1) असङ्ग (2) मैत्रेय (3) चन्द्रकीर्ति (4) नागार्जुन

73. धर्मों की नि:स्वभावता से यह सिद्धान्त विकसित हुआ है :

(1) निर्वाण (2) नैरात्म्य (3) क्षणभङ्गवाद (4) धर्मशून्यता

74. कथावत्थु प्रकरण है :

(1) त्रिपिटक का अंश (2) अट्ठकथा

(3) बुद्धघोष की जीवनी (4) अभिधम्मपिटक की टीका

75. मिलिन्दपञ्हो के मुख्य दार्शनिक आचार्य हैं :

(1) नागबोधि (2) नागाह्वय (3) नागार्जुन (4) नागसेन

76. मिलिन्द का समय है :

(1) लगभग 100 ई० (2) लगभग 300 ई०

(3) लगभग 700 ई० (4) लगभग 200 ई० पू०

77. बौद्ध निकायों की सङ्ख्या है :

(1) 28 (2) 18 (3) 10 (4) 14

78. संयुत्तनिकाय इसका अंश है :

(1) सुत्तपिटक (2) निकायाभिधर्मशास्त्र

(3) विनयपिटक (4) विद्याधरपिटक

79. धम्मसङ्गणि का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है :

(1) अभिधर्म और विभज्यवाद (2) तर्कशास्त्र

(3) शून्यता सिद्धान्त (4) निर्वाण

80. अश्वघोष की कृति हैं :

(1) बुद्धचरित (2) कुमारसम्भव

(3) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता (4) शिशुपालवध

81. नागार्जुन की रचनायें हैं :

(1) शून्यतासप्ततिवृत्ति, सुह्रदल्लेख (2) चतु:शतक, चतु:शतकवृत्ति

(3) अभिधर्मामृत, अभिधर्मकोश (4) बुद्धानुस्मृतिशास्त्र, निर्वाणशतक

82. शाश्वतोच्छेदनिर्मुक्तं तत्त्वं सौगतसम्मतम् – यह कारिकांश इनकी कृति से उद्धृत है :

(1) नागार्जुन (2) चन्द्रकीर्ति (3) अद्वयवज्र (4) आर्यदेव

83. लङ्कावतारसूत्र इस सम्प्रदाय का आधार ग्रन्थ है :

(1) माध्यमिक (2) वैभाषिक (3) सहजयान (4) विज्ञानवाद

84. बौद्ध सिद्धों में मुख्य हैं :

(1) कम्बलपाद (2) सरहपा (3) जालन्धरीपा (4) शान्तिपा

85. बौद्धतन्त्रों के प्रकार हैं :

(1) तीन (2) पाँच (3) दो (4) चार

86. विमलप्रभा इस ग्रन्थ की टीका है :

(1) दोहाकोष (2) हेवज्रतन्त्र

(3) नामसङ्गीतितन्त्र (4) श्रीलघुकालचक्रतन्त्रराजा

87. विमलप्रभा के रचयिता हैं :

(1) सरोरुहपाद (2) पुण्डरीक (3) सहजकीर्ति (4) धर्मकीर्ति

88. क्षणभङ्गसिद्धि के रचयिता हैं :

(1) धर्मकीर्ति (2) शुभगुप्त (3) रत्नकीर्ति (4) ज्ञानश्रीमित्र

89. योगाचारमतावलम्बी सत्य की कोटियाँ मानते हैं :

(1) दो (2) तीन (3) पाँच (4) छः

90. बोधिचर्यावतारपञ्जिका के लेखक हैं :

(1) कमलशील (2) ज्ञानश्रीमित्र (3) प्रज्ञाकरमति (4) शान्तरक्षित

91. शान्तरक्षित की कृति है :

(1) तत्त्वसङ्ग्रह (2) बोधिचर्यावतार

(3) अवदानकल्पलता (4) बोधिचर्यावतारपञ्जिका

92. स्कन्धों की सङ्ख्या है :

(1) तीन (2) चार (3) छः (4) पाँच

93. धातु हैं :

(1) बारह (2) सोलह (3) तीन (4) अट्ठारह

94. आयतनों की सङ्ख्या है :

(1) बारह (2) आठ (3) दस (4) अट्ठारह

95. माध्यमिक तत्त्व को मानते हैं :

(1) त्रैधातुकरूप (2) अशून्य

(3) चतुष्कोटिविनिर्मुक्त (4) सत्स्वभाव

96. नागार्जुन के आविर्भाव का समय है ;

(1) 500 ई० पू० (2) 300 ई०

(3 400 ई० पू० (4) द्वितीय शताब्दी ईस्वी सन् (ल.)

97. परमार्थसत्य को ये परिनिष्पन्नलक्षण मानते हैं :

(1) योगाचार विज्ञानवादी (2) वैभाषिक

(3) माध्यमिक (4) सौत्रान्तिक

98. दो सत्यों का सिद्धान्त इन्हें मान्य है :

(1) सौत्रान्तिक (2) वैभाषिक (3) माध्यमिक (4) तन्त्रवादी

99. अविद्या है :

(1) पूर्वजन्म की कर्मदशा (2) पूर्वजन्म का कर्मफल

(3) पूर्वजन्म की क्लेशदशा (4) प्रत्युत्पन्न अध्वा का अज्ञान

100. संस्कार हैं :

(1) पूर्व जन्म की कर्म दशा (2) पूर्वजन्म के क्लेश स्थिति

(3) पूर्वजन्म की वासना (4) पौराणिक धर्म के अङ्ग

101. अभिधर्मामृत इनकी रचना है :

(1) बुद्धघोष (2) वसुबन्धु (3) कात्यायनीपुत्र (4) घोषक

102. हरिभद्र की रचना है :

(1) अभिसमयालङ्कारकारिका (2) अभिसमयवृत्ति
(3) अभिसमयालङ्कारटीका (4) अभिसमयालङ्कारालोक शास्त्र

103. सेकोद्देशटीका के रचयिता हैं :

(1) नडपाद या नारोपा (2) सरहपा
(3) तिल्लोपा (4) विरूपा

104. वज्रयान है :

(1) महायान का एक सम्प्रदाय (2) तन्त्रयान का एक सम्प्रदाय
(3) थेरवाद का पूर्ववर्ती सम्प्रदाय (4) महासङ्घिकमत का दूसरा नाम

105. तन्त्रयान में इन दो प्रस्थानों के सिद्धान्त स्वीकृत हैं :

(1) योगाचार, वैभाषिक (2) वैभाषिक, सौत्रान्तिक
(3) वैभाषिक, शैवसिद्धान्त (4) माध्यमिक, योगाचार

106. कालचक्रतन्त्र बौद्धतन्त्रयान के इस सम्प्रदाय का ग्रन्थ है :

(1) कालचक्रयान (2) सहजयान
(3) चक्रसंवर (4) वज्रयान

107. क्षणसम्पदियं सुदुर्लभा प्रतिलब्धा पुरुषार्थ साधनी ।। यह पंक्ति इस ग्रन्थ का अंश है :

(1) तत्त्वसंग्रह (2) महायानसंग्रह
(3) महायानोत्तरतन्त्र (4) बोधिचर्यावतार

108. शिक्षासमुच्चय इनके द्वारा सङ्कलित है :

(1) असङ्ग (2) मैत्रेयनाथ (3) शान्तिदेव (4) नागार्जुन

109. सूत्रसमुच्चय इनकी रचना मानी जाती है :

(1) असङ्ग (2) शान्तिदेव (3) आर्यदेव (4) नागार्जुन

110. महावग्ग इस पिटक का अंश है :

(1) विनय पिटक (2) सुत्तपिटक

(3) अभिधम्मपिटक (4) विद्याधर पिटक

111. मार ने सिद्धार्थ के तप में :

(1) बाधा उत्पन्न की (2) सहायता की

(3) उनके सहायकों को हटाया (4) उनके सहायकों को बुलाया

112. भव का अर्थ है :

(1) वर्तमान जन्म (2) पूर्व जन्म

(3) जन्म के पूर्व की अवस्था (4) भावी जन्म

113. 'अन्तराभवसन्तत्या कुक्षिमेति प्रदीपवत् : इस पंक्ति में अन्तराभव का अर्थ है :

(1) वर्तमान और पिछले जन्म के बीच की अवस्था

(2) भावी जन्ज

(3) अतीत अध्वा

(4) मरण और पुनर्भव के बीच की अवस्था

114. नीवरणों की संख्या है :

(1) नौ (2) छः (3) चार (4) पाँच

115. प्रमाणवार्तिक और प्रज्ञाकर कृतभाष्य के प्रथम सम्पादक हैं :

(1) एरिच फ्राउवालनर (2) एलेक्सबेमैन

(3) दलसुख मावणिया (4) राहुल सांकृत्यायन

116. महायान ग्रन्थ के रचयिता हैं :

(1) प्रो. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय (2) आचार्य नरेन्द्र देव

(3) आचार्य शान्ति भिक्षु शास्त्री (4) आचार्य प्रहलाद प्रधान

117. चीनी भाषा से संस्कृत में अभिधर्मसमुच्चय का पुनरुद्धार इन्होंने किया है :

(1) डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची (2) डॉ. शान्ति भिक्षु शास्त्री

(3) डॉ. सुनीति कुमार पाठक (4) डॉ. प्रहलाद प्रधान

118. संस्कृत भाषा में अभिधर्मकोशभाष्य के प्रथम सम्पादक हैं :

(1) डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची (2) डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

(3) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (4) डॉ. प्रहलाद प्रधान

119. चतु:स्तव के लेखक हैं :

(1) आर्यदेव (2) चन्द्रकीर्ति (3) नागबोधि (4) नागार्जुन

120. बाह्यों न विद्यते ह्यर्थो यथा बालैर्विकल्प्यते। वासनैर्लुडितं चित्तमर्थाभासै: प्रवर्तते ।। यह गाथा इस ग्रन्थ से उद्धृत हैं :

(1) योगाचारभूमिशास्त्र (2) ललित विस्तर

(3) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमि (4) लङ्कावतारसूत्र

121. बुद्ध के अनुसार दु:खों का मुख्य कारण है :

(1) भव (2) जाति (3) तृष्णा (4) अविद्या

122. राहुल था :

(1) बुद्ध का पौत्र (2) शुद्धोदन का भाई

(3) सुप्रबुद्ध का पुत्र (4) सिद्धार्थ का पुत्र

123. उपालि था बुद्ध का :

(1) गुरु (2) गुरुभाई (3) छात्र (4) शिष्य

124. आनन्द थे बुद्ध के :

(1) प्रमुख शिष्य (2) गुरु (3) चाचा (4) भाई

125. अजित केश कम्बली बुद्ध के समकालीन श्रमणों में थे :

(1) चतुर्भूतवादी (2) नियतिवादी (3) अक्रियावादी (4) क्रियावादी

126. निग्गण्ठ नातपुत्त इनका दूसरा नाम था :

(1) वर्धमान महावीर (2) प्रकुध कात्यायन

(3) संजय वेलट्ठिपुत्र (4) अञ्जन

127. वर्धमान महावीर का एक प्रमुख सिद्धान्त है :

(1) सप्तभङ्गीनय (2) तृष्णाप्रहाण (3) सुखवाद (4) क्षणभङ्गवाद

128. मारघर्षण परिवर्त इस ग्रन्थ का अंश है :

(1) लङ्कावतारसूत्र (2) गण्डव्यूहसूत्र (3) गुह्यसमाज (4) ललित विस्तर

129. *डॉ. नलिनाक्ष दत्त की कृति है :*

(1) महायान बुद्धिज्म (2) ऑब्सक्योर रेलिजस् कल्ट्स

(3) तान्त्रिक ट्रेडीशन *(4) ओरिजिन्स ऑव बुद्धिज्म्*

130. बौद्ध दर्शन मीमांसा ग्रन्थ के रचयिता हैं :

(1) डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय (2) डॉ. राम प्रसाद त्रिपाठी

(3) डॉ. हरिहर नाथ त्रिपाठी (4) आचार्य बलदेव उपाध्याय

131. ये तत्त्व को निर्विकल्प, प्रत्यात्मवेद्य और शान्त मानते हैं :

(1) असङ्ग (2) आर्यदेव (3) हरिवर्मा (4) नागार्जुन

132. माध्यमिक भवाङ्गों की सङ्ख्या मानते हैं :

(1) तीन (2) चार (3) दो (4) बारह

133. निम्नलिखित आचार्य तत्त्व को चतुष्कोटियों से अतीत मानते हैं :

(1) नागार्जुन, मैत्रेयनाथ (2) कुमारलात, दिङ्नाग

(3) रत्नकीर्ति ज्ञानश्रीमित्र (4) शुभगुप्त धर्मकीर्ति

134. महायान का लक्ष्य है :

(1) परार्थचिन्ता, महाकरूणा और बुद्धत्व की प्राप्ति

(2) अर्हत्त्व की प्राप्ति

(3) सकृदागामि पद की प्राप्ति

(4) अनागामी पद की प्राप्ति

135. स्वातान्त्रिक माध्यमिक का लक्ष्य है :

(1) प्रसङ्गापादन

(2) स्वतन्त्रतर्कों की उपस्थापित कर अपने पक्ष को पुष्ट करना

(3) न्यायसम्मत तर्कों का पोषण

(4) तान्त्रिक चर्या को स्वीकार करना

136. भावविवेक थे एक :

(1) एक स्वातन्त्रिक माध्यमिक आचार्य (2) एक प्रासङ्गिक माध्यमिक आचार्य

(3) एक नैयायिक (4) एक वैभाषिक आचार्य

137. अकुताभया इनकी रचना मानी जाती है :

(1) असङ्ग (2) वसुबन्धु (3) मैत्रेयनाथ (4) नागार्जुन

138. अकुतोभया इस ग्रन्थ की व्याख्या है :

(1) चतु:शतक (2) चतु:स्तव

(3) माध्यमिक कारिका (4) उत्तरतन्त्र

139. विग्रहव्यावर्त्तनी के रचयिता हैं :

(1) डॉ. रामचन्द्र पाण्डेय (2) चन्द्रकीर्ति

(3) भावविवेक (4) नागार्जुन

140. विग्रहव्यावर्त्तनी में वर्णित हैं :

(1) नि:स्वभावता और शून्यता के पोषक तर्क

(2) सस्वभाववाद

(3) उच्छेदवाद

(4) सप्तभङ्गीनय

141. वैदल्यप्रकरण के लेखक हैं :

(1) आर्यदेव (2) चन्द्रकीर्ति (3) रत्नाकरशान्ति (4) नागार्जुन

142. वैदल्यप्रकरण का प्रतिपाद्य है :

(1) प्रमाण-निरास (2) प्रमाणस्थापन

(3) प्रामाण्यवाद (4) परत: प्रामाण्यावाद

143. महायानोत्तरतन्त्रशास्त्र के लेखक हैं :

(1) मैत्रेयनाथ (2) असंग (3) वसुबन्धु (4) स्थिरमति

144. योनासन्न सन्न सदसन्न सतो नासतो ..... यह पंक्ति इस ग्रन्थ से उद्धृत है :

(1) महायानसम्परिग्रहशास्त्र (2) महायानसंग्रहशास्त्र

(3) महायानोत्तरतन्त्रशास्त्र (4) मध्यान्तविभागशास्त्र

145. मध्यान्तविभागशास्त्र(कारिका) के रचयिता हैं :

(1) आचार्य मैत्रेयनाथ (2) आर्य असङ्ग

(3) आचार्य वसुबन्धु (4) आचार्य स्थिरमति

146. मध्यान्तविभागभाष्यटीका के रचयिता हैं :

(1) आचार्य वसुबन्धु (2) आचार्य सारमति

(3) आचार्य असङ्ग (4) आचार्य स्थिरमति

147. सौन्दरनन्द महाकाव्य इनकी रचना है :

(1) कालिदास (2) नागार्जुन (3) मातृचेट (4) अश्वघोष

148. अध्यर्धशतक के रचयिता हैं

(1) आर्यशूर (2) मातृचेट (3) नागार्जुन (4) कालिदास

149. तं गौरवं बुद्धगतं चकर्ष भार्यानुराग: पुनराचकर्ष । सोऽनिश्चयान्नापि ययौ न तस्थौ तरस्तरङ्गेष्विव राजहंस : ।। यह श्लोक इस महाकाव्य से उद्धृत है :

(1) बुद्धचरित (2) रघुवंश (3) पउमचरिउ (4) सौन्दरनन्द

150. शारिपुत्रप्रकरण के रचयिता हैं :

(1) बुद्धघोष (2) अश्वघोष (3) मञ्जुघोष (4) धर्मत्रात

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में ***लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त,*** लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. ***उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।***
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. ***उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।***
6. ***ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।***
7. ***उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।***
8. ***प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।***
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ***ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।***
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त *केवल* ***ओ एम आर उत्तर-पत्र*** परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।